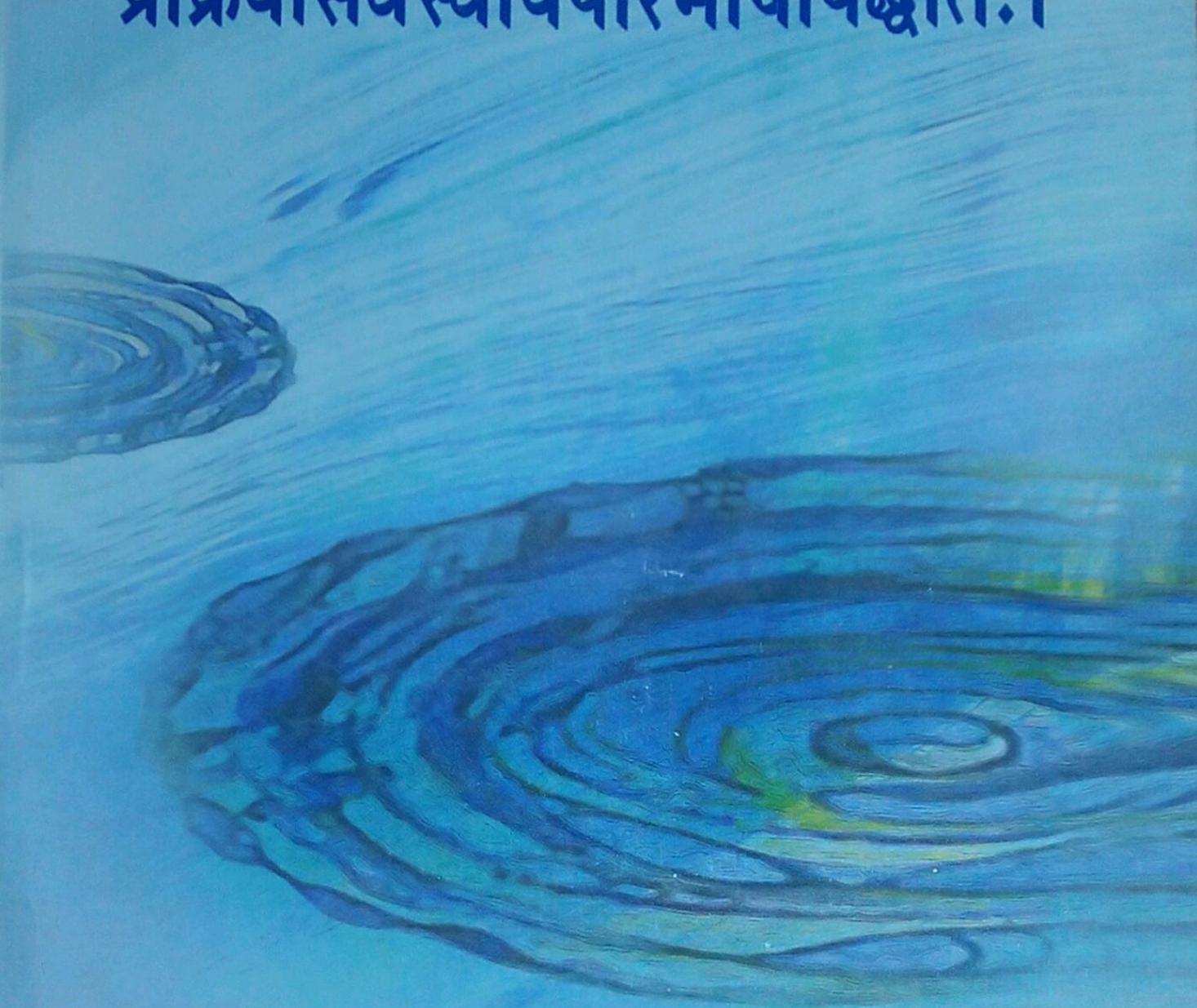


प्रक्रियासर्वस्वीयपरिभाषापद्धतिः।



यमुना के.

**प्रक्रियासर्वस्वीयपरिभाषापद्धतिः।**  
**यमुना के.**

**Silver Jubilee Series - 7**  
**First Published : 2018**  
**©Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady**

**Published by :**  
**Publication Division**  
**Sree Sankaracharya University of Sanskrit,**  
**Kalady Ernakulam Dist., Kerala - 683 574**  
**Ph. 0484 - 2465470**  
**Web : [www.ssus.ac.in](http://www.ssus.ac.in), E-mail : [po@ssus.ac.in](mailto:po@ssus.ac.in)**

**Layout design**  
**Mahin mohan**

**Printed at : Sankaracharya University**

**Price : 380/-**

# प्रक्रियासर्वस्वीयपरिभाषापद्धतिः।

यमुना के.



SANKARACHARYA  
UNIVERSITY PRESS

# विषयानुक्रमणिका।

## उपोद्धातः

१. विवक्षातः करकाणि।	33
२. कारकादन्यत्रापि वक्तुर्विवक्षितपूर्विकाशब्दप्रवृत्तिर्जेया।	34
३. सूत्रे लिङ्गवचनाद्यप्रामाण्यमपि विवक्षातः।	34
४. एकयोगनिर्दिष्टानां सह वा प्रवृत्तिः सह वा निवृत्तिः।	35
५. एकयोगनिर्दिष्टानामप्येकदेशोऽनुवर्तते।	36
६. चानुकृष्टमुत्तरत्र नानुवर्तते।	37
७. क्वचिदनुवर्तते।	38
८. अनन्तरस्य विधिः प्रतिषेधो वा।	38
९. विशेषनिर्दिष्टः प्रकृतं न बाधते।	39
१०. अर्थवशाद् विभक्तिविपरिणामः।	40
११. अर्थवद्धृहणे नानर्थकस्य।	40
१२. न वर्णानिनस्मन्ग्रहणेषु।	41
१३. लक्षणप्रतिपदोक्तयोः प्रतिपदोक्तस्यैव ग्रहणम्।	45
१४. प्रातिपदिकग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि।	46
१५. प्रकृतिग्रहणे यड्लुगन्तस्यापि।	48
१६. तदागमास्तद्धृहणेन गृह्यन्ते।	50
१७. तन्मध्यपतितस्तद्धृहणेन गृह्यते।	51
१८. सन्निपातलक्षणो विधिरनिमित्तं तद्विधातस्य।	51
१९. वर्णश्रयप्रत्ययात्वपुगत्वेऽद्वस्वत्वयत्वानि	52

वर्णविचालपुग्रस्वटाबाल्लोपसम्बुद्धिलोपदी  
धर्णाम्।

२०. असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे।	56
२१. नाजानन्तर्ये।	58
२२. गौणमुख्ययोः मुख्ये कार्यसम्प्रत्ययः।	59
२३. प्रसिद्धे सहचरिते च।	60
२४. कृत्रिमाकृत्रिमयोः कृत्रिमे।	61
२५. क्वचिदुभयगतिः।	61
२६. सिद्धे सत्यारम्भो नियमार्थः।	62
२७. धातोः स्वरूपग्रहणे तत्प्रत्यये कार्यविज्ञानम्।	62
२८. नज्युक्तस्य तत्सदृशे।	63
२९. उक्तार्थानामप्रयोगः।	64
३०. निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः।	65
३१. सन्नियोगशिष्टानामेकापायेऽन्यतरस्याप्यभावः।	65
३२. नान्वाचीयमाननिवृत्तौ प्रधानस्य।	66
३३. निरनुबन्धकग्रहणे न सानुबन्धकस्य।	67
३४. एकानुबन्धकग्रहणे न द्व्यनुबन्धकस्य।	67
३५. नानुबन्धकृतान्यसारूप्यानेजन्तत्वाने काल्त्वानि।	68
३६. समासान्तागमसंज्ञापकगणनज्ञिर्दिष्टान्य नित्यानि।	70
३७. अनित्याः पूर्वनिपाताः।	75
३८. अनित्यमातिदेशिकम्।	75
३९. उत्सर्गापवादयोरपवादो विधिर्बलवान्।	76
४०. क्वचिदपवादविषयेऽप्युत्सर्गः।	76
४१. पुरस्तादपवादः अनन्तरान् विधीन् बाधन्ते।	77

४२. मध्येपवादः पूर्वन्।	78
४३. यत्प्राप्तावुपदेशोऽनर्थकः स विधिर्बाध्यते।	78
४४. येन नाप्राप्ते यो विधिरारभ्यते स तस्य बाधकः।	79
४५. बलवन्नित्यमनित्यात्।	80
४६. अन्तरङ्गं बहिरङ्गात्।	82
४७. निरवकाशः सावकाशात्।	83
४८. वर्णदाङ्गम्।	84
४९. सम्प्रसारणं सम्प्रसारणाश्रयञ्च।	84
५०. उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिः।	85
५१. लुगन्तरङ्गेभ्यः।	86
५२. सर्वेभ्यो लोपः।	87
५३. लोपादजादेशः।	88
५४. आदेशादागमः।	89
५५. आगमात्सर्वदेशः।	89
५६. सकृद्गतौ विप्रतिषेधे यद्वधितं तद् बाधितमेव।	89
५७. पुनःप्रसङ्गविज्ञानात्सिद्धम्।	90
५८. क्वचित्पूर्वम्।	91
५९. णल्लोपावियङ्गणुणवृद्धिदीर्घेभ्यः पूर्वविप्रतिषेधेन।	92
६०. कविधेस्तमबादयः पूर्वविप्रतिषेधेन।	94
६१. नुमचिरतृज्वद्वावेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन।	95
६२. वृद्ध्यौत्वगुणेभ्यो नुम् पूर्वविप्रतिषेधेन।	95
६३. केचिद्वाङ्स्योरिनादादेशाविच्छन्ति पूर्वविप्रतिषेधेन।	96

६४. नानिष्ठार्था शास्त्रप्रवृत्तिः।	97
६५. अङ्गवृत्ते पुनर्वृत्तावविधिर्निष्ठितस्य।	97
६६. यावत्सम्भवस्तावद्विधिः।	98
६७. पर्जन्यवल्लक्षणप्रवृत्तिः।	99
६८. अकृतकारि खल्वपि शास्त्रं क्वचिद्वति।	100
६९. कार्यकालं संज्ञापरिभाषम्।	100
७०. यथोद्देशं संज्ञापरिभाषम्।	101
७१. प्रत्येकं वाक्यपरिसमाप्तिः।	101
७२. समुदाये वाक्यपरिसमाप्तिः।	102
७३. व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिः।	102
७४. अभिधानलक्षणाः कृतद्वितसमासाः।	103
७५. अङ्गाधिकारे पदाधिकारे च क्वचित्तदन्तस्यापि ग्रहणम्।	103
७६. प्रत्ययग्रहणे यस्मात्स विहितस्तदादेरपञ्चम्याम्।	104
७७. कृद्वहणे गतिकारकपूर्वस्यापि।	105
७८. न प्रातिपदिकेन।	106
७९. यस्मिन्विधिस्तदादावल्यग्रहणे।	107
८०. अन्त्याभावेऽन्त्यसदेशस्य।	107
८१. निर्दिश्यमानस्यादेशाः।	108
८२. प्रकृतिवदनुकरणम्	109
८३. एकदेशविकृतमनन्यवत्।	110
८४. भूतपूर्वकत्वात् तद्वदुपचारः।	111
८५. भाविनि भूतवदुपचारः।	111
८६. अवयवेऽप्यवयविवदुपचारः।	112
८७. णियकोर्न प्रत्ययलक्षणम्।	113

८८. उत्तरपदत्वे चापदादिविधौ।	114
८९. नानर्थकेऽलोन्त्यविधिरनभ्यासविकारे।	115
९०. येन नाव्यवधानं तेन व्यवहितेऽपि वचनप्रामाण्यात्।	116
९१. गतिकारकोपपदानां कृद्धिस्सह समासवचनं प्राक्सुबुत्पत्तेः।	117
९२. बहुव्रीहौ तदगुणसंविज्ञानमपि।	118
९३. अवयवेन विग्रहः समुदायः समासार्थः।	119
९४. वर्णकदेशाः न वर्णग्रहणेन गृह्यन्ते।	119
९५. अभ्यासविकारेष्वपवादा नोत्सर्गान् विधीन् बाधन्ते।	120
९६. लुग्विकरणालुग्विकरणयोरलुग्विकरणस्य ग्रहणम्।	121
९७. अकृतव्यूहाः पाणिनीयाः।	122
९८. अवयवे कृतं लिङ्गं समुदायस्य विशेषकम्।	123
९९. अनुकरणस्यासिद्धिरनुकार्यस्वरूपविनाशप्रस ङ्गात्।	124
१००. रूढौ नावयवार्थाः प्रकाशन्ते।	125
१०१. आ दशतः सङ्ख्याः सङ्ख्येये वर्तन्तेऽतः परं सङ्ख्याने सङ्ख्येये च।	125
१०२. विचित्रा सूत्रस्य कृतिः पाणिनेः।	126
१०३. औपदेशिकप्रासङ्गकयोरौपदेशिकस्य ग्रहणम्।	128
१०४. अपरस्य प्रवृत्येह शास्त्रे कार्यम्।	128
१०५. न निमित्तकार्यं नैमित्तिकस्य।	129
१०६. असति हि सम्भवे बाधनं भवति।	130

१०७. उभयत आश्रये नान्तादिवद्वावः।	131
१०८. वर्णश्रियविद्वौ नान्तादिवद्वावः।	131
१०९. सर्वविधेः इडिवधिर्बलीयान्।	131
११०. प्रत्ययाप्रत्यययोः प्रत्यये कार्यसम्प्रत्ययः।	132
१११. व्यपशिवद्वावोऽप्रातिपदिकेन।	132
११२. प्रधानान्वाचयशिष्टयोः प्रधाने कार्यसम्प्रत्ययः।	133
११३. योगविभागादिष्टप्रसिद्धिः।	133
११४. ग्रन्थाधिक्यादर्थाधिक्यम्।	134
११५. ग्रहणवता प्रविभागो गरीयान्।	135
११६. अलिङ्गमसङ्ख्यमव्ययम्।	135
११७. समासवृत्तिस्तद्वितवृत्त्या बाध्यते।	136
११८. अवयवप्रसिद्धेः समुदायप्रसिद्धिर्बलीयसी।	137
११९. समुदाये प्रवृत्ताः शब्दा अवयवेऽपि प्रवर्तन्ते।	137
१२०. अव्यक्तो गुणः सन्देहे नपुंसके प्रवर्तते।	138
१२१. नैकमुदाहरणं योगरम्भं प्रयोजयति।	138

## Appendix

### munitrayaprāmāṇya of Metarules in Prakriyāsarvasva

1. vivakṣātaḥ karakāṇi	141
2. kārakādanyatrāpi vakturvivakṣitapūr vikāśabdapravṛttirjñeyā	143
3. sūtre liṅgavacanādyaprāmāṇyamapi vivakṣātaḥ	145

4. ekayoganirdiṣṭānāṁ saha vā pravṛttih saha vā nivṛttih	146
5. ekayoganirdiṣṭānāmapyekadeśo:'nuvartate	147
6. cānukrṣṭamuttaratra nānuvartate	148
7. kvacidanuvartate	149
8. anantarasya vidhiḥ pratiṣedho vā	150
9. viśeṣanirdiṣṭah prakṛtam na bādhate	150
10. arthavaśād vibhaktivipariṇāmaḥ	151
11. arthavadgrahaṇe nānarthakasya	151
12. na varṇāninasmangrahaṇeṣu	152
13. lakṣaṇapratipadoktayoḥ pratipadoktasyaiva grahaṇam	153
14. prātipadikagrahaṇe liṅgaviśiṣṭasyāpi	154
15. prakṛtigrahaṇe yanlugantasyāpi	155
16. tadāgamāstadgrahaṇena gr̥hyante	155
17. tanmadhyapatitastadgrahaṇena gr̥hyate	156
18. sannipātalakṣaṇo vidhiranimittam tad- vighātasya	157
19. varṇāśrayapratyayātvapugatvedḍhrasvatva- yatvāni varṇavicālapugghrasvatābāl lopasambuddhilopadīrghāṇām	158
20. asiddham bahiraṅgamantaraṅge	159
21. nājānantarye	160
22. gauṇamukhyayoh mukhye kāryasamprat- yayaḥ	160

23. prasiddhe sahacarite ca	161
24. kṛtrimākṛtrimayoh kṛtrime	163
25. kvacidubhayagatih	164
26. siddhe satyārambho niyamārthaḥ	165
27. dhātoḥ svarūpagrahaṇe tatpratyaye kāryavijñānam	166
28. nañyuktasya tatsadrśe	167
29. uktārthānāmaprayogaḥ	168
30. nimittābhāve naimittikasyāpyabhāvah	168
31. sanniyogaśiṣṭānāmekāpāye:'nyatarasyāp- yahāvah	169
32. nānvācīyamānanivṛttau pradhānasya	170
33. niranubandhakagrahaṇe na sānuban- hakasya	171
34. ekānubandhakagrahaṇe na dvyanuban- hakasya	172
35. nānubandhakṛtānyasārūpyānejantatvānekālt- vāni	173
36. samāsāntāgamasamjñājñāpak- agañanañnirdiṣṭānyanityāni	174
37. anityāḥ pūrvanipātāḥ	175
38. anityamātideśikam	176
39. utsargāpavādayorapavādo vidhirbalavān	177
40. kvacidapavādavisaye:'pyutsargaḥ	177
41. purastādapavādaḥ anantarān vidhīn bādhante	178

42. madhyepavādāḥ pūrvān	178
43. yatprāptāvupadeśo:narthakah sa vidhibādhyate	178
44. yena nāprāpte yo vidhirārabhyate sa tasya bādhakah	179
45. balavannityamanityāt	180
46. antaraṅgam bahiraṅgāt	181
47. niravakāśah sāvakāśāt	181
48. varṇādāṅgam	182
49. samprasāraṇam samprasāraṇāśrayañca	182
50. upapadavibhakteḥ kārakavibhaktih	183
51. lugantaraṅgebhyah	183
52. sarvebhyo lopah	184
53. lopādajādeśah	185
54. ādeśādāgamaḥ	186
55. āgamātsarvādeśah	186
56. sakṛdgatau vipratiṣedhe yadbādhitam tadbādhitameva	186
57. punahprasaṅgavijñānātsiddham	187
58. kvacitpūrvam	187
59. ḡallopāviyañyāṅguṇavṛddhidīrghebhyah pūrvavipratiṣedhena	188
60. kavidhestamabādayah pūrvavipratiṣedhena	188
61. numaciratrjvadbhāvebhyo nuṭ pūrvavipratiṣedhena	188

62. vṛdhyautvaguṇebhyo num pūrvavipratiṣedhena	189
63. kecītānasyorinādādeśāvicchanti pūrvavipratiṣedhena	189
64. nāniṣṭārthā śāstrapravṛttih	190
65. aṅgavr̥tte punarvṛttāvavidhirniṣṭhitasya	190
66. yāvatsambhavastāvadvidhiḥ	190
67. parjanyavallakṣaṇapratipṛtiḥ	191
68. akṛtakāri khalvapi śāstraṁ kvacidbhavati	191
69. kāryakālam samjñāparibhāṣam	192
70. yathoddeśam samjñāparibhāṣam	192
71. pratyekam vākyaparisamāptiḥ	193
72. samudāye vākyaparisamāptiḥ	193
73. vyakhyānato viśesapratipattiḥ	193
74. abhidhānalakṣaṇāḥ kṛttaddhitasamāsāḥ	194
75. aṅgādhikāre padādhikāre ca kvacittadantasyāpi grahaṇam	194
76. pratyayagrahaṇe yasmātsa vihitastadāderapañcamyām	195
77. kṛdgahaṇe gatikārakapūrvasyāpi	196
78. na prātipadikena	197
79. yasminvidhistadādāvalgrahaṇe	197
80. antyābhāve:’ntyasadeśasya	198
81. nirdiśyamānasyādeśāḥ	198
82. prakṛtivadanukaraṇam	199
83. ekadeśavikṛtamanaṇyavat	199

84. bhūtapūrvakatvāt tadavadupacārah	199
85. bhāvini bhūtavadupacārah	200
86. avayave:'pyavayavivadupacārah	201
87. ḥiyakorna pratyayalakṣaṇam	201
88. uttarapadatve cāpadādividhau	202
89. nānarthake:'lontyavidhiranabhyāsavikāre	202
90. yena nāvyavadhānam tena vyavahite:'pi vacanaprāmāṇyāt	203
91. gatikārakopapadānām kṛdbhissaha samāsavacanam prāksubutpatteḥ	203
92. bahuvrīhau tadguṇasamvijñānamapi	204
93. avayavena vigrahaḥ samudāyah samāsārthaḥ	204
94. varṇaikadeśāḥ na varṇagrahanena gṛhyante	204
95. abhyāsavikāreśvapavādā notsargān vidhīn bādhante	205
96. lugvikaraṇālulgvikaraṇayoralugvi karaṇasya grahaṇam	205
97. akṛtavyūhāḥ pāṇinīyāḥ	206
98. avayave kṛtam liṅgam samudāyasya višeṣakam	207
99. anukaraṇasyāsiddhiranukāryasvarūpa- vināśaprasaṅgāṭ	207
100. rūḍhau nāvayavārthāḥ prakāśante	208

101. ā daśataḥ saṅkhyāḥ saṅkhyeye vartante:’taḥ param saṅkhyāne saṅkhyeye ca	208
102. vicitrā sūtrasya kṛtiḥ pāṇineḥ	209
103. aupadeśikaprāsaṅgikayoraupadeśikasya grahaṇam	209
104. aparasya pravṛtyeḥa śāstre kāryam	210
105. na nimittakāryam naimittikasya	211
106. asati hi sambhave bādhanam bhavati	211
107. ubhayata āśraye nāntādivadbhāvaḥ	212
108. varṇāśrayaviddhau nāntādivadbhāvaḥ	212
109. sarvavidheḥ iḍvidhirbalīyān	213
110. pratyayāpratyayayoh prat�aye kāryasampratyayaḥ	214
111. vyapaśivadbhāvo:’prātipadikena	215
112. pradhānānvācayaśiṣṭayoh pradhāne kāryasampratyayaḥ	215
113. yogavibhāgādiśṭaprasiddhiḥ	216
114. granthādhikyādarthādhikyam	216
115. grahaṇavatā pravibhāgo garīyān	217
116. aliṅgamasaṅkhyamavyayam	218
117. samāsavṛttistaddhitavṛttiā bādhyate	218
118. avayavaprasiddheḥ samudāyaprasiddhir balīyasī	219
119. samudāye pravṛttāḥ śbdā avayave:’pi pravarttante	220

120. *avyakto gunah sandehe napumsake* 220  
*pravartate*
121. *naikamudāharanam yogarambhām* 220  
*prayojayati*



यशोदा के.

संस्कृतव्याकरणशास्त्रे वहवः परिभाषाग्रन्थाः समभवन्। तेषु  
व्याडिकृतपरिभाषासूचनम्, पुरुषोत्तमदेवस्य लघुपरिभाषावृत्तिः,  
सीरदेवस्य द्रुहत्परिभाषावृत्तिः च प्रथिताः। नागेशमट्टकृतपरिभाषे-  
न्तुशेखरस्तु तत्र प्रथमगणनीयः। चान्द्रशाकटायनादिष्वपाणिनीयव्या-  
करणमस्प्रदायेष्वपि परिभाषासूत्राणि तेषां बृत्तयश्च उपलभ्यन्ते।  
नागेशमट्टाल्पूर्वे पोडशशानके लघुजन्मना मेल्पत्तूर् नारायणमट्टन  
लिखिते प्रक्रियासर्वस्वे न्यायखण्डनाङ्गि भागे एकविंशत्यधिकक्षतपरि-  
भाषाः उपनिबद्धाः। परिमितैः वाक्यैः तेषां वर्णना च कृता।  
व्याडिसीरदेवादिभिः पाणिनीयसम्प्रदायायानुसारं रचितेषु परिभाषापाठेषु  
समाकलिताः परिभाषाः तथा चन्द्रशाकटायनभोजादिभिः तत्त्वमस्प्रदा-  
येषु समाहृताः परिभाषाश्चोपजीव्य कृतः अयं न्यायखण्डनामकः  
समाहारः इत्यस्त्यस्य विशेषः। न्यायखण्डे प्रतिपादितानां तासां  
परिभाषाणां तद्वाख्यानस्य च सुगमार्थबोधाय मेल्पत्तूर् नारायणमट्टस्य  
व्याकरणपरिभाषापद्धतेः परिचायनाय च प्रक्रियासर्वस्वीयपरिभाषा-  
पद्धतिरिति नामकोऽयं ग्रन्थः। ग्रन्थेऽस्मिन् प्रक्रियासर्वस्वस्य न्यायखण्डे  
समाहृतानां एकविंशत्यधिकक्षतपरिभाषाणां तथा नारायणमट्टकृत-  
टीकायाश्च विवरणं मूलपडितमुद्धृत्य निवेशितः। उपोद्धातरूपेण  
ग्रन्थादौ अस्य परिभाषापाठस्य नमीक्षात्मकं विवरणम् अन्ते  
अनुबन्धरूपेण आङ्गलभाषाया तासां परिभाषाणां वर्णनं च अस्ति।



Sree Snakracharya University of Sanskrit, Kalady  
Kalady P.O, Ernakulam District, Kerala 683574  
Ph: 0484 2463380, [www.ssus.ac.in](http://www.ssus.ac.in)

Price - 380.00

ISBN NUMBER



978-81-937517-1-8



SANKARACHARYA  
UNIVERSITY PRESS